11. सुमित्रानन्दन पंत

कवि परिचय –

कवि सुमित्रानन्दन पंत का जन्म उत्तराखण्ड के जिला अल्मोड़ा के गाँव कौसानी में हुआ। जन्म के छः घण्टे बाद ही माता का निधन हो गया। इनका प्रारम्भिक नाम गुसाईदत्त रखा गया। प्रारम्भिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई। 1918 में मँझले भाई के साथ काशी आकर क्वींस कॉलेज से माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् आप इलाहाबाद आ गए। बाद में इन्होंने अपना नाम सुमित्रानन्दन पंत रख लिया। 1921 में असहयोग आंदोलन एवं महात्मा गांधी के प्रभाव से महाविद्यालय छोड़ दिया और घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, अँग्रेजी और बंगला का अध्ययन करने लगे। इन्होंने इलाहाबाद आकाशवाणी में शुरूआती दिनों में सलाहकार के रूप में भी कार्य किया। अल्मोड़ा की प्राकृतिक सुषमा बचपन से ही पंतजी को प्रभावित करती रही, जिसका प्रभाव उन पर जीवनभर रहा।

चौथी कक्षा से ही पंतजी ने कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया था। 1916 में लिखी 'गिरजे का घण्टा' शीर्षक कविता उनकी प्रथम कविता मानी जाती है। कवि की रचना यात्रा को चार चरणों में बाँटा जा सकता है। **प्रथम-चरण** – 'उच्छ्वास' से लेकर 'गुंजन' तक की कविता, भाव एवं सौन्दर्य चेतना से भरपूर हैं। गुंजन काल की रचनाओं में जीवन-विकास के सत्य पर पंत का अटल विश्वास झलकता है। प्रमुख संग्रह 'उच्छ्वास' (1920 ई०), 'ग्रन्थि' (1920ई०), 'वीणा' (1927 ई०), 'पल्लव' (1928 ई०), और 'गुंजन' (1932 ई०) हैं।

द्वितीय-चरण – इसमें कवि की कविताएँ नवीन जीवन तथा युग-परिवर्तन की धारणा को सामाजिक रूप देने की कोशिश करती दिखाई देती है। कविताओं पर प्रगतिवाद एवं मार्क्सवाद का प्रभाव दिखाई देता है। इस चरण की कृतियाँ हैं – (1) 'युगान्त' 1936 (2) 'युगवाणी' 1939 (3) 'ग्राम्या' 1940। इसी दौरान आपने 'रूपाभ' नामक पत्र का भी सम्पादन किया।

तीसरा–चरण – पंत जैसे भावुक-मन कवि अधिक समय तक प्रगतिवाद और मार्क्सवाद की कठोर धारा में नहीं रह सके। वे पुनः अपनी मूल धारा के काव्य की रचना करने लगे। तृतीय चरण की रचनाओं में 'स्वर्ण किरण', 'स्वर्ण धूलि', 'युगपथ', 'अतिमा', 'उत्तरा' आदि शामिल हैं।

चौथा–चरण – 'कला और बूढ़ा चाँद' से लेकर 'लोकायतन' तक चौथे चरण में उनकी चेतना मानवतावाद की तरफ प्रवृत्त हुई। यहाँ कवि व्यक्ति और समाज के मध्य सामंजस्य स्थापित कर लोक-मंगल की कामना रखता है। 'चिदम्बरा' में इनकी कविताओं का संकलन है।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि कवि रचनाओं के विकास क्रम में विचारों के विषय में परिवर्तनशील रहे हैं। यहाँ निराला और पंत में अन्तर स्पष्ट दिखता है कि निराला का परिवर्तन जहाँ एक दिशा विशेष की तरफ अग्रसर होता रहता है वहीं पंत के परिवर्तन में एक अस्थिरता एवं अनिश्चितता है। कुछ भी हो पंत एक प्रकृति के चितेरे कवि रहे हैं। उन्होंने भारतीय काव्य जगत में बँधी–बँधाई लीक से हटकर उसे एक नई दिशा प्रदान की है। पंत की कविताओं में निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं – प्रकृति एवं सौन्दर्य

से अभिभूत कर देने वाले चित्र। रचनाओं में सर्वप्रथम कला उसके उपरान्त विचार एवं अन्त में भावों का स्थान रहता है। शिल्प को अधिक महत्व दिया है। अलंकृत एवं चित्रमयी भाषा का प्रयोग। दूसरे चरण की कविता में प्रगतिवादी प्रभाव। उनके काव्य में विषय एवं शैलीगत गतिशीलता विद्यमान रही हैं। भौतिकवाद व अध्यात्मवाद के समन्वय का प्रयास। रूपों एवं प्रतीकों का प्रयोग।

पंतजी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, यथा – पद्मभूषण (1961), ज्ञानपीठ (1968), साहित्य अकादमी तथा सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार।

पाठ परिचय –

इस अध्याय में कवि पंत की दो कविताओं को लिया गया है। प्रथम कविता 'भारत माता' 'ग्राम्य' नामक कविता संग्रह से ली गई है। इसमें स्वतंत्रता से पूर्व के ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण है। ग्रामीण जीवन दरिद्रता के अभिशाप से ग्रस्त है। कवि ने प्रतीक रूप में भारतमाता को ग्रामवासिनी बताकर भारत की दुर्दशा का वर्णन किया है। परन्तु कवि निराश न होकर आशा से भरपूर रहता है।

दूसरी कविता 'धरती कितना देती है' पंत के भाग्यवादी दर्शन पर आधारित है। इसमें कवि स्पष्ट रूप से कहता है कि जैसा कर्म होगा वैसा ही फल प्राप्त होगा। अतः व्यक्ति को स्वार्थ एवं लोभ के वशीभूत होकर कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिसका परिणाम अच्छा न हो।

मूल पाठ –

भारत माता

भारत माता
ग्रामवासिनी!
खेतों में फैला है श्यामल,
धूल भरा मैला सा आँचल,
गंगा यमुना में आँसू जल,
मिट्टी की प्रतिमा
उदासिनी!
दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन,
अधरों में चिर नीरव रोदन,
युग–युग के तम से विषण्ण मन,
वह अपने घर में
प्रवासिनी!
तीस कोटि संतान नग्न तन,
अर्ध क्षुधित, शोषित, निरस्त्र जन,
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन,

नत–मस्तक
तरु तल निवासिनी!
स्वर्ण शस्य पर-पदतल लुंठित,
धरती सा सहिष्णु मन कुंठित,
क्रंदन कंपित अधर मौन स्मित,
राहु-ग्रसित
शरदेन्दु हासिनी!
चिंतित भृकुटि-क्षितिज तिमिरांकित,
नमित नयन नभ वाष्पाच्छादित,
आनन श्री छाया शशि उपमित,
ज्ञान मूढ़
गीता प्रकाशिनी!
सफल आज उसका तप संयम,
पिला अंहिसा स्तन्य सुधोपम,
हरती जन-मन-भय, भव-तम-श्रम,
जग जननी
जीवन विकासिनी!
भारतमाता
ग्रामवासिनी।

धरती कितना देती है

आः, धरती कितना देती है।
मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोए थे,
सोचा था पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी,
और फूल फलकर मैं मोटा सेठ बनूँगा।
पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बंध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला।
सपने जाने कहाँ मिटे, कब धूल हो गए।
मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक,
बाल कल्पना के अपलक पाँवड़े बिछाकर।

मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोये थे,
ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था।
अर्धशती हहराती निकल गई तब से,
कितने ही मधु पतझर बीत गए अनजाने,
ग्रीष्म तपे, वर्षा फूली, शरदें मुसकाईं,
सी-सी कर हेमन्त कँपे, तरु झरे खिले वन,
औ, जब फिर से गाढ़ी ऊदी लालसा लिए,
गहरे कजरारे बादल बरसे धरती पर,
मैंने कोतूहलवश आँगन के कोने की
गीली तह में यों ही उँगली से सहलाकर,
बीज सेम के दबा दिये मिट्टी के नीचे।
भू के अंचल में मणि-माणिक बाँध दिए हों।
मैं फिर भूल गया इस छोटी सी घटना को,
और बात भी क्या थी याद जिसे रखता मन!
किन्तु, एक दिन जब मैं संध्या को आँगन में
टहल रहा था,– तब सहसा मैंने जो देखा।
उससे हर्ष–विमूढ़ हो उठा मैं विस्मय से!
देखा-आँगन के कोने में कई नवागत
छोटा-छोटा छाता ताने खड़े हुए हैं।
छाता कहूँ कि विजय–पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ, खोले थे वे नन्हीं प्यारी–
जो भी हो, वे हरे-हरे उल्लास से भरे
पंख मार कर उड़ने को उत्सुक लगते थे
डिम्ब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चों से!
निर्निमेष, क्षण भर मैं उनको रहा देखता–
सहसा मुझे स्मरण हो आया-कुछ दिन पहले
बीज सेम के रोपे थे मैंने आँगन में,
और उन्हीं से बौने पौधों की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से
नन्हें नाटे पैर पटक, बढ़ती जाती है।

तब मैं उनको रहा देखता, धीरे-धीरे।
अनगिनत पत्तों से लद, भर गईं झाड़ियाँ,
हरे-भरे टँग गए कई मखमली चँदोवे।
बेलें फैल गईं बल खा आँगन में लहरा,
और सहारा लेकर बाड़े सी टट्टी का
हरे-हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर को।
मैं अवाक् रह गया– वंश कैसे बढ़ता है!
छोटे, तारों-से छितरे, फूलों के छींटे
झागों-से लिपटे लहरी श्यामल लतरों पर
सुन्दर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ-से
चोटी के मोती-से, आँचल के बूटों-से,
ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ टूटीं।
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ–
पतली चौड़ी कलियाँ, उफ उनकी क्या गिनती!
लम्बी-लम्बी अंगुलियों सी, नन्हीं नन्हीं
तलवारों-सी, पन्ने के प्यारे हारों-सी,
झूठ न समझें, चन्द्रकलाओं-सी नित बढ़तीं,
सच्चे मोती की लड़ियों सी, ढेर-ढेर खिल
झुण्ड-झुण्ड झिलमिल कर कचपचिया तारों-सी,
आः, इतनी फलियाँ टूटीं, जाड़ों भर खाईं,
सुबो शाम वे घर-घर पकीं, पड़ोस पास के
जाने अनजाने सब लोगों में बँटवाई,
बंधु-बांधवों, मित्रों, अभ्यागत मँगतों ने,
जी भर-भर दिन-रात मुहल्ले भर ने खाईं।
कितनी सारी फलियाँ, कितनी सारी फलियाँ।
यह धरती कितना देती है, धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को!
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्व को,
बचपन में निज स्वार्थ लोभवश पैसे बोकर।
रत्न-प्रसविनी है वसुधा अब समझ सका हूँ।
इसमें सच्ची ममता के दाने बोने हैं

इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं
इसमें मानवता ममता के दाने बोने हैं
जिससे उगल सके फिर धूलि सुनहरी फसलें।
मानवता के जीवन श्रम से हँसें दिशाएँ।
हम जैसा बोयेंगे वैसा ही पायेंगे।

शब्दार्थ –

भारतमाता –

श्यामल – काला/ मिट्टी की प्रतिमा – दरिद्रता की मूर्ति/ नत–चितवन – झुकी हुई दृष्टि/ रोदन – रोना/ विषण्ण – दुःखी, शोकमग्न/ कोटि – करोड़/ अर्ध क्षुधित – आधे भूखे/ नत–मस्तक – झुके हुए सिर वाला/ स्वर्ण शस्य – सोने के समान मूल्यवान/ पदतल लुंठित – पैरों के नीचे लुढ़का हुआ/ क्रंदन – विलाप, रोना/ स्मित – मुस्कराहट, मुस्कान/ शरदेन्दु – शरद ऋतु का चन्द्रमा/ क्षितिज – जहाँ धरती और आकाश के मिलने का आभास होता है, देखने की सीमा/ तिमिर – अंधकार, निराशा/ भृकुटि – भौंहे, भौं/ उपमित – तुलना किया हुआ/ सुधोपम – अमृत जैसा/ आँसू जल – करुणा के आँसू/ उदासिनी –दुखिया/ नीरव – मूक, चुपचाप, शांत/ तम – अंधकार/ प्रवासिनी – देश से बाहर रहने वाली/ (यहाँ अर्थ – बिना अधिकार वाली होगा)/ निरस्त्र – शस्त्र रहित, निहत्थे/ मूढ़ – अज्ञानी/ तरुतल – पेड़ों के नीचे/ पर – दूसरा/ कुंठित – निराश/ अधर – होठ/ राहुग्रसित – विदेशी शासकों के अधीन/ हासिनी – कांति, चाँदनी, रोशनी/ वाष्पाच्छादित – भाप से ढके हुए, अश्रुयुक्त/ आनन – मुख, चेहरा/ भव – संसार/ हरती – दूर करती, मिटाती।

धरती कितना देती है –

कलदार – मशीन से ढला हुआ सिक्का, रुपया/ फूल फलकर – विकसित होकर/ अंकुर – बीज से निकलता नया पौधा/ हताश – निराश, जिसकी आशा नष्ट हो गई हो, दुःखी/अबोध–नासमझ/हहराती – डरती हुई, खुशीपूर्वक, उत्साहपूर्वक/ शरदें – एक ऋतु का नाम जो क्वार से कार्तिक महीने तक रहती है/ ऊदी – काला–बैंगनी रंग/ कोतूहलवश – उत्सुकता के कारण/ मणि–माणिक – बहुमूल्य रत्न/ विस्मय – आश्चर्य, अचम्भा/ डिम्ब – अण्डा/ पलटन – फौज, सैनिकों का समूह/ चँदोवे – छोटे शामियाने, छोटे तम्बू/ झरने – पर्वत आदि से नीचे गिरती जलधारा/ लतरों – बेलों, लताओं/ कचपचिया – पूर्व की ओर दिखाई देने वाले कृतिका नक्षत्र के तारों का समूह/प्रसविनी – जन्म देने वाली, उत्पन्न करने वाली/ अभ्यागत – अतिथि, मेहमान/ खनकेंगी – रुपयों की आवाज आएगी/ बंजर – ऐसी धरती जिस पर कुछ भी पैदा न हो/ बंध्या – ऐसी स्त्री या गाय जिसके बच्चे न होते हों, बाँझ/ पाँवड़े – आदरणीय व्यक्ति के सम्मान हेतु पैरों के नीचे बिछाया जाने वाला कपड़ा, पायंदान/ अर्द्धशती – आधी शताब्दी, आधा जीवन/ मधु – बसन्त ऋतु/ हेमन्त – एक ऋतु जो मार्गशीर्ष और पौष महीने में पड़ती है/ कजरारे – काजल लगे हुए, काले, काजल जैसे/ सेम – एक फली जो सब्जी के काम आती है/ हर्ष–विमूढ़ – खुशी से बेसुध/ पताकाएँ – झण्डे, ध्वज/ निर्निमेष – अपलक देखना, टकटकी लगाकर/ झाड़ियाँ – कंटीले पौधों का समूह/ बाड़े सी

ट्टटी – बेल चढ़ाने हेतु काम आने वाली बाड़ या दीवार / अवाक् – स्तब्ध, आश्चर्य चकित होना, जिसमें मुख से आवाज न निकले / पन्ने – हरे रंग के प्रसिद्ध रत्न / ममता – माँ का संतान के प्रति प्यार या स्नेह।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारतमाता है–

   (क) ग्राम-वासिनी (ख) नगर-वासिनी

   (ग) पाताल-वासिनी (घ) महल-वासिनी ( )

2. कविता लिखते समय भारतमाता की संतानों की संख्या कितनी थी–

   (क) 20 करोड़ (ख) 30 करोड़

   (ग) 40 करोड़ (घ) 120 करोड़ ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कविता में भारतमाता का आँचल कैसा दिखता है ?
2. भारतमाता को किसकी प्रकाशिनी बताया गया है ?
3. 'धरती कितना देती है' में कवि ने बचपन में क्या बोए थे ?
4. ऊपर बढ़ती बेलों की तुलना लेखक ने किससे की है ?
5. नए उगे सेम के पौधे कवि को कैसे लगे ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. पैसे बो कर कवि ने क्या कल्पना की ?
2. ग्रामवासिनी भारतमाता किस हालत में दिखती है ?
3. भारतमाता का संयम किस प्रकार से सफल रहा ?
4. कवि ने सेम की फलियाँ किस-किस को बाँटी ?
5. कवि लोभवश क्या नहीं समझ पाया था ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भारतमाता की स्थिति कविता में कैसी है ? तथा क्यों है ?
2. पैसे एवं सेम की बिजाई के माध्यम से कवि कविता में क्या संदेश देना चाहते हैं ?
3. पंतजी के रचना-कर्म पर प्रकाश डालिए।
4. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

   (क) तीस कोटि ..... शरदेन्दुहासिनी ?

   (ख) सफल आज ..... जीवनविकासिनी।

   (ग) पर बंजर धरती ..... तृष्णा को सींचा था।

   (घ) यह धरती कितना ..... अब समझ सका हूँ।

•••